वर्षा जल संग्रहण और पानी के दोबारा उपयोग से होगा सुधार

प्रो. शशांक शेखर

दिल्ली विश्वविद्यालय में भूविज्ञान विभाग के प्रोफेसर

दिल्ली में बढ़ती आबादी और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के कारण भूजल दोहन पर दबाव बढ़ा है। इसके बावजूद स्थिति में सुधार संभव है। बीच में इसे लेकर गंभीरता दिखाई गई गई थी जिससे सकारात्मक बदलाव देखने को मिले थे। इस तरह के प्रयास को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। दिल्ली जल बोर्ड औसत 1000 एमजीडी पानी आपूर्ति करता है। इसमें से लगभग आठ सौ एमजीडी ही पानी उपभोक्ताओं तक पहुंच पाता है। जनसंख्या के हिसाब से दिल्ली में प्रतिदिन 1200 से 1300 एमजीडी पानी की आवश्यकता है। मौटे तौर पर कहें तो प्रतिदिन चार सौ एमजीडी कम पानी की आपूर्ति हो रही है। लोग इसकी पूर्ति अवैध बोरवेल लगाकर करते हैं। पूरी दिल्ली में भूजल दोहन हो रहा है। इससे भूजल स्तर नीचे गिर रहा है।

नियोजित विकास के साथ ही उसके साथ लगते गांवों में अनियोजित विकास में भी तेजी आई है। दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) द्वारा उपलब्ध होने वाले मकान खरीदना सभी के लिए संभव नहीं है। इस कारण अनियोजित विकास बढ़ रहा है। इसे अनियोजित कालोनी कहते हैं। इन क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति के लिए भूजल का दोहन बढ़ रहा है। मई- जून में गर्मी बढ़ने पर जलसंकट बढ़ता है। सरकारी तंत्र भी कई तरह के दावे करता है। भूजल स्तर बढ़ाने की बात होती है, लेकिन वर्षा शुरू होते ही सभी शांत हो जाते हैं। प्रत्येक वर्ष की यही स्थिति रहती है। दूरगामी प्रभाव को ध्यान में रखकर कोई तैयारी नहीं हो रही है। वर्षा जल संचयन के लिए बहुत प्रभावी तरीके से काम नहीं हो रहा है। वर्षा जल संचयन प्रणाली लगाई जाती है लेकिन उसके रखरखाव पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसमें सुधार की आवश्यकता है। दिल्ली में सैकड़ों तालाब थे। इसमें से अधिकांश सूख गए या अतिक्रमण से समाप्त हो गए। इन्हें पुनर्जीवित करने का प्रयास शुरू किया गया है, लेकिन यह काम बहुत धीमी गति से हो रहा है। यह काम युद्ध स्तर किया जाना चाहिए। तालाब को पुनर्जीवित कर वर्षा के पानी को संग्रहित किया जा सकता है। इसके रखरखाव में भी परेशानी नहीं होगी। वाष्पीकरण को रोकने के लिए तालाब के आसपास विशेष प्रजाति के पेड़ लगाना लाभदायक होगा। यमुना बाढ़ क्षेत्र की भूमि का भी जल संग्रहण के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। यहां पर बाढ़ के पानी को संग्रहित कर दिल्ली में जल आपूर्ति की जा सकती है। पल्ला की तरह यमुना बाढ़ क्षेत्र में अन्य स्थानों पर नलकूप क्षेत्र विकसित किया जाना चाहिए।

सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) की गुणवत्ता सुधारकर उपचारित पानी के उपयोग को बढ़ाना होगा। दिल्ली में एसटीपी से लगभग 607 एमजीडी उपचारित जल मिलता है। बाढ़ क्षेत्र में पानी संग्रहित करके और एसटीपी के उपचारित पानी के सदुपयोग से दिल्ली में जल आपूर्ति की समस्या दूर की जा सकती है। इससे भूजल दोहन में कमी आएगी। एसटीपी के पानी को कृत्रिम झील में डालकर भूजल स्तर बढ़ाने की भी सलाह दी जाती है। जिन क्षेत्रों में भूजल स्तर कम है वहां यह प्रयोग किया जा सकता है। इसके लिए भी एसटीपी की गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। इसके लिए आधुनिक तकनीक व नियमित निगरानी जरूरी है। वर्षा जल संग्रहण व तालाबों के जीर्णोद्धार का यह उचित समय है।

दिल्ली के साथ ही एनसीआर के अन्य शहरों में भी यह समस्या है। ऊपरी हरियाणा क्षेत्र में भूजल दोहन की समस्या कम है। लेकिन, गुरुग्राम व फरीदाबाद में यह समस्या है। उत्तर प्रदेश में आने वाले एनसीआर के शहरों में लोनी, गाजियाबाद में भूजल स्तर नीचे गिर रहा है। इन शहरों में भी आवश्यक कदम उठाने होंगे। एनसीआर के शहरों में तेजी से आवासीय क्षेत्र विकसित हो रहे हैं। प्रत्येक आवासीय परिसर में पार्क व क्लब बनाए जाते हैं। इसमें बदलाव करना होगा। पार्क के साथ छोटे-छोटे तालाब बनाने की आवश्यकता है। प्रत्येक आवासीय परिसर में एसटीपी की व्यवस्था होने के साथ ही इसकी निगरानी आवश्यक है जिससे कि उपचारित पानी का फिर से उपयोग किया जा सके। अनवरत प्रयास से भूजल स्तर को सुधारा जा सकता है। केंद्र व दिल्ली सरकार जब इसके लिए मिलकर प्रयास करेंगे तभी समस्या का समाधान होगा।

(उदय जगताप से हुई बातचीत पर आधारित)

nwda.gov.in